रविवार 14 जुलाई, 2019

विषय — धर्मविधि

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 51 : 17

"टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; टूटे और पिसे मन को"

उत्तरदायी अध्ययन: इब्रानियों 9 : 11-15

11 परन्तु जब मसीह आने वाली अच्छी अच्छी वस्तुओं का महायाजक होकर आया, तो उस ने और भी बड़े और
सिद्ध तम्बू से होकर जो हाथ का बनाया हुआ नहीं, अर्थात इस सृष्टि का नहीं।
12 और बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश
किया, और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया।
13 क्योंकि जब बकरों और बैलों का लोहू और कलोर की राख अपवित्र लोगों पर छिड़के जाने से शरीर की शुद्धता
के लिये पवित्र करती है।
14 तो मसीह का लोहू जिस ने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के साम्हने निर्दोष चढ़ाया, तुम्हारे
विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो।
15 और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. रोमियो 12 : 1, 2

1 इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित,
और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
2 और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए,
जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. मत्ती 4 : 18-25

18 उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछवे थे।
19 और उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।
20 वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।
21 और वहां से आगे बढ़कर, उस ने और दो भाइयों अर्थात जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया
22 वे तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए॥
23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।
24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।
25 और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली॥

3. लूका 9 : 1, 2, 6, 57-62

1 फिर उस ने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बिमारियों को दूर करने की सामर्थ और अधिकार दिया।
2 और उन्हें परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने, और बिमारों को अच्छा करने के लिये भेजा।
6 सो वे निकलकर गांव गांव सुसमाचार सुनाते, और हर कहीं लोगों को चंगा करते हुए फिरते रहे॥
57 जब वे मार्ग में चले जाते थे, तो किसी न उस से कहा, जहां जहां तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा।
58 यीशु ने उस से कहा, लोमडिय़ों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, पर मनुष्य के पुत्र को सिर धरने की भी जगह नहीं।
59 उस ने दूसरे से कहा, मेरे पीछे हो ले; उस ने कहा; हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं।
60 उस ने उस से कहा, मरे हुओं को अपने मुरदे गाड़ने दे, पर तू जाकर परमेश्वर के राज्य की कथा सुना।
61 एक और ने भी कहा; हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं।
62 यीशु ने उस से कहा; जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं॥

4. लूका 10 : 1, 2

1 और इन बातों के बाद प्रभु ने सत्तर और मनुष्य नियुक्त किए और जिस जिस नगर और जगह को वह आप जाने पर था, वहां उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा।
2 और उस ने उन से कहा; पके खेत बहुत हैं; परन्तु मजदूर थोड़े हैं: इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो, कि वह अपने खेत काटने को मजदूर भेज दे।

5. लूका 14 : 1-7 (दृष्टान्त देने योग्य), 16 (एक निश्चित)-27, 33-35

1 फिर वह सब्त के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर में रोटी खाने गया: और वे उस की घात में थे।
2 और देखो, एक मनुष्य उसके साम्हने था, जिसे जलन्धर का रोग था।
3 इस पर यीशु ने व्यवस्थापकों और फरीसियों से कहा; क्या सब्त के दिन अच्छा करना उचित है, कि नहीं परन्तु वे चुपचाप रहे।
4 तब उस ने उसे हाथ लगा कर चंगा किया, और जाने दिया।
5 और उन से कहा; कि तुम में से ऐसा कौन है, जिस का गदहा या बैल कुएं में गिर जाए और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त बाहर न निकाल ले?
6 वे इन बातों का कुछ उत्तर न दे सके॥
7 जब उस ने देखा, कि नेवताहारी लोग क्योंकर मुख्य मुख्य जगहें चुन लेते हैं तो एक दृष्टान्त देकर उन से कहा।
16 उस ने उस से कहा; किसी मनुष्य ने बड़ी जेवनार की और बहुतों को बुलाया।
17 जब भोजन तैयार हो गया, तो उस ने अपने दास के हाथ नेवतहारियों को कहला भेजा, कि आओ; अब भोजन तैयार है।
18 पर वे सब के सब क्षमा मांगने लगे, पहिले ने उस से कहा, मैं ने खेत मोल लिया है; और अवश्य है कि उसे देखूं: मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे क्षमा करा दे।
19 दूसरे ने कहा, मैं ने पांच जोड़े बैल मोल लिए हैं: और उन्हें परखने जाता हूं : मैं तुझ से बिनती करता हूं, मुझे क्षमा करा दे।
20 एक और ने कहा; मै ने ब्याह किया है, इसलिये मैं नहीं आ सकता।
21 उस दास ने आकर अपने स्वामी को ये बातें कह सुनाईं, तब घर के स्वामी ने क्रोध में आकर अपने दास से कहा, नगर के बाजारों और गलियों में तुरन्त जाकर कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अन्धों को यहां ले आओ।
22 दास ने फिर कहा; हे स्वामी, जैसे तू ने कहा था, वैसे ही किया गया है; फिर भी जगह है।
23 स्वामी ने दास से कहा, सड़कों पर और बाड़ों की ओर जाकर लोगों को बरबस ले ही आ ताकि मेरा घर भर जाए।
24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि उन नेवते हुओं में से कोई मेरी जेवनार को न चखेगा।
25 और जब बड़ी भीड़ उसके साथ जा रही थी, तो उस ने पीछे फिरकर उन से कहा।
26 यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के बालों और भाइयों और बहिनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
27 और जो कोई अपना क्रूस न उठाए; और मेरे पीछे न आए; वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।
33 इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।
34 नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह किस वस्तु से स्वादिष्ट किया जाएगा।

35 वह न तो भूमि के और न खाद के लिये काम में आता है: उसे तो लोग बाहर फेंक देते हैं: जिस के सुनने के कान हों वह सुन ले॥

6. मत्ती 13 : 44-46

44 स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल लिया॥
45 फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था।
46 जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 241 : 19-22

सभी भक्ति का तत्व ईश्वरीय प्रेम का प्रतिबिंब और प्रदर्शन है, बीमारी को ठीक करना और पाप को नष्ट करना है। हमारे मास्टर ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

2. 1 : 6-9

प्रार्थना, देखना, और काम करना, आत्म-अलगाव के साथ संयुक्त, ईश्वर का अनुग्रह है जो मानव जाति के ईसाईकरण और स्वास्थ्य के लिए सफलतापूर्वक किया गया है।

3. 20 : 27-32

सेंट पॉल ने लिखा, “तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें;" इसका मतलब है, आइए हम भौतिक और आत्मविश्वास को अलग रखें और सभी उपचारों के दिव्य सिद्धांत और विज्ञान की तलाश करें।

4. 4 : 5-11

हमारे मास्टर की आज्ञाओं को रखने के लिए और उनके उदाहरण का पालन करने के लिए, क्या वह हमारे लिए उचित ऋण है और उसने जो कुछ भी किया है, उसके लिए हमारी कृतज्ञता का एकमात्र योग्य प्रमाण है। बाहरी पूजा स्वयं के

प्रति वफादार और हार्दिक आभार व्यक्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है, क्योंकि उसने कहा है: "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।"

5. 11: 22-27

हम जानते हैं कि पवित्रता पाने के लिए पवित्रता की इच्छा आवश्यक है; लेकिन अगर हम सब से ऊपर पवित्रता की इच्छा रखते हैं, तो हम इसके लिए सब कुछ त्याग देंगे। हमें ऐसा करने के लिए तैयार होना चाहिए, ताकि हम पवित्रता के लिए एकमात्र व्यावहारिक मार्ग में सुरक्षित रूप से चल सकें।

6. 9: 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

7. 27: 22-27

यीशु ने एक समय में सत्तर छात्रों को भेजा, लेकिन केवल ग्यारह ने एक वांछनीय ऐतिहासिक रिकॉर्ड छोड़ दिया। परंपरा उसे दो या तीन सौ अन्य शिष्यों के साथ श्रेय देती है जिन्होंने कोई नाम नहीं छोड़ा है। "क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं॥" वे अनुग्रह से दूर हो गए क्योंकि वे कभी भी अपने गुरु के निर्देश को नहीं समझते थे।

8. 38: 26-32

पाप और स्वयं के विश्वास में दबे हुए लोगों के लिए, केवल आनंद या इंद्रियों की संतुष्टि के लिए जीना, उन्होंने कहा: तुम जो आंखें रहते हुए नहीं देखते, जो कान रहते हुए नहीं सुनते, ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से बूझें, और मन फिरावें और चंगे हो जाएं। उन्होंने सिखाया कि भौतिक इंद्रियाँ सत्य और उसकी उपचार शक्ति को बंद कर देती हैं।

9. 129: 30-6

उदार जिगर लेखक के टेबल के सुख के छोटे अनुमान पर आपत्ति कर सकता है। पापी देखता है, इस पुस्तक में सिखाई गई व्यवस्था में, कि परमेश्वर की माँग को पूरा करना चाहिए। क्षुद्र बुद्धि मन को निरंतर प्रसन्न करती है।

इसकी थोड़ी सी आध्यात्मिक संभावनाओं को देखते हुए लाइसेंसशुदा स्वभाव को हतोत्साहित किया जाता है। जब सभी पुरुषों को दावत के लिए प्रतिबंधित किया जाता है, तो बहाने आते हैं। एक के पास खेत है, दूसरे के पास माल है और इसलिए वे स्वीकार नहीं कर सकते।

10. 91: 16-21

भौतिक स्वार्थ में लीन हम विचार और प्रतिबिंबित करते हैं, लेकिन जीवन या मन के प्रति पदार्थ को फीका करते हैं। भौतिक स्वार्थ का खंडन, मनुष्य की आध्यात्मिक और शाश्वत व्यक्ति के विवेक को प्रभावित करता है, और पदार्थ से प्राप्त गलत ज्ञान को नष्ट कर देता है या जिसे भौतिक इंद्रियां कहा जाता है।

11. 455: 20-2

ईश्वर सर्वोच्च सेवा के लिए चयन करता है जो इस तरह की फिटनेस के लिए विकसित हुआ है क्योंकि यह मिशन के किसी भी दुरुपयोग को एक असंभवता प्रदान करता है। सभी बुद्धिमान अयोग्य पर अपने उच्चतम विश्वासों को पूरा नहीं करते हैं। जब वह एक संदेशवाहक का कमीशन करता है, तो यह वह है जो आध्यात्मिक रूप से खुद के पास है। कोई भी व्यक्ति इस मानसिक शक्ति का दुरुपयोग नहीं कर सकता है, अगर उसे ईश्वर को समझाना सिखाया जाए।

क्रिश्चियन साइंस में इस मजबूत बिंदु को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए, - कि एक ही फव्वारा मीठा पानी और कड़वा दोनों को आगे नहीं भेज सकता है। मानसिक चिकित्सा और शिक्षण के क्षेत्र में आपकी उपलब्धि जितनी अधिक होगी, मानव जाति को उसकी सर्वोच्च आशा और उपलब्धि के लिए जानबूझकर प्रभावित करना उतना ही असंभव होगा।

12. 456: 5-15, 19-20

ईश्वरीय सिद्धांत और वैज्ञानिक पद्धति के नियमों के सख्त पालन ने ईसाई विज्ञान के छात्रों की एकमात्र सफलता हासिल की है। यह अकेले उन्हें उच्च स्तर पर ले जाता है, जो उनमें से अधिकांश समुदाय में रखते हैं, एक प्रतिष्ठा जो उनके प्रयासों द्वारा प्रयोगात्मक रूप से उचित है। जो कोई इस बात की पुष्टि करता है कि ईसाई विज्ञान का प्रदर्शन करने का एक से अधिक सिद्धांत और तरीका है, वह अज्ञानतावश या जानबूझकर गलत करता है, और खुद को ईसाई विज्ञान उपचार की वास्तविक अवधारणा से और अपने संभावित प्रदर्शन से अलग करता है।

व्यक्ति को सत्य के मनोबल में रहना चाहिए या वह ईश्वरीय सिद्धांत को प्रदर्शित नहीं कर सकता है।

13. 457 : 19-24

ईसाई विज्ञान सामान्य नियम का अपवाद नहीं है, कि सीधी रेखा में श्रम के बिना कोई उत्कृष्टता नहीं है। कोई अपनी आग को नहीं फैला सकता है, और एक ही समय में निशान मारा। अन्य विज्ञानों को आगे बढ़ाने और इस विज्ञान के प्रदर्शन में तेजी से आगे बढ़ना संभव नहीं है।

14. 459 : 3-8

पॉल और जॉन को स्पष्ट आशंका थी कि, जैसा कि नश्वर मनुष्य बलिदान के अलावा कोई सांसारिक सम्मान प्राप्त नहीं करता है, इसलिए उसे सभी सांसारिकता का त्याग करके स्वर्गीय धन प्राप्त करना चाहिए। तब उसके पास दुनियादारी के अभिप्रायों, उद्देश्यों और उद्देश्यों के साथ कुछ भी सामान्य नहीं होगा।

15. 33 : 31-17

क्या वे सभी जो यीशु की याद में रोटी खाते हैं और शराब पीते हैं, अपना प्याला पीना चाहते हैं, अपना क्रूस लेते हैं, और मसीह-सिद्धांत के लिए सब छोड़ देते हैं? फिर एक मृत संस्कार की प्रेरणा को दिखाने के बजाय, त्रुटि दिखाने और शरीर को "भगवान के लिए स्वीकार्य," बनाकर दिखाने के बजाय कि सत्य समझ में आ गया है? यदि मसीह, सत्य, प्रदर्शन में हमारे पास आए हैं, तो प्रदर्शन के लिए किसी अन्य स्मारक की आवश्यकता नहीं है, प्रदर्शन के लिए इमैनुअल, या भगवान हमारे साथ हैं; और यदि कोई मित्र हमारे साथ है, तो हमें उस मित्र के स्मारक की आवश्यकता क्यों है?

अगर कभी संस्कार का हिस्सा बनने वाले सभी लोगों ने यीशु की पीड़ाओं को याद किया और उनके प्याले को पीया, तो उन्होंने दुनिया में क्रांति ला दी। यदि सभी जो भौतिक प्रतीकों के माध्यम से अपने स्मरणोत्सव की तलाश करते हैं, तो क्रूस को उठाएंगे, बीमारों को चंगा करेंगे, बुराइयों को बाहर निकालेंगे, और गरीबों को मसीह, या सत्य का उपदेश देंगे, - ग्रहणशील विचार, - वे सहस्त्राब्दी में लाएंगे।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6